

नीम मीठी - करी पत्ता

Kari Patta



वानस्पतिक नाम - *Murraya Koenigii*

विभिन्न भाषाओं में नाम

हिन्दी - मीठा नीम

मराठी - करी पत्ता. महारुख, घाणेरा निंब

गुजराती - अरेडूसो

बंगला - कार्याफली

कर्नाटकी - कयाहेबेबु

इराणी - संजदकर खीकुनार

लेटिन - *Murraya Koenigii*

मीठा नीम से हम सभी भली-भाँति परिचित हैं। मुख्यतः साउथ एशिया का यह सदस्य उच्च हिमालयीन क्षेत्र को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। यह एक सदाबहार पेड़ है और इसीलिये सदाबहार वनों में बहुतायत से पाया जाता है। सामान्यतः इसे 'करीपत्ता भी कहा जाता है क्योंकि इसके पत्तों को स्वादवृद्धि हेतु 'करी' में डाला जाता है।



मीठा नीम का पौधा एक बड़ी झाड़ी होती है। इसकी ऊँचाई 2 से 5 मीटर तक होती है। इस प्रकार इसे एक छोटा वृक्ष भी कहा जा सकता है।

तना पर्याप्त काष्ठीय होता है। तने में छाल भी अच्छी निकलती है। शाखाएँ बहुत ज्यादा होती हैं।

इसकी पत्तियाँ हरी, संयुक्त प्रकार की समसंख्यात्मक पर्णिकाओं वाली तथा ग्रंथिमय होती है। इसीलिये इन पत्तियों में विशिष्ट प्रकार की सुगंध आती है।

प्रकृति में विख्यात 6 स्वादों में इन पत्तियों का स्वाद कटु माना गया है। इसकी पत्तियों में पाई जाने वाली ग्रंथियों में 'इसेंशियल ऑयल्स' (Essential Oils) होते हैं जिनमें मुराया सायनिन तथा कैरियोफायलिन प्रमुख हैं।

इसके पुष्प सफेद, फनल के आकार के तथा खुशबूदार होते हैं। फल गोल, बैंगनी से काले चमकदार तथा मात्र 1 बीज वाले होते हैं।



वैश्यवर्ण का यह मध्यमवर्गीय वृक्ष (उच्चवर्गीय

झाड़ी) वनस्पति जगत में रूटेसी (Rutaceae) कुल का सदस्य है। इसका वनस्पतिक नाम 'मुराया कोएनिजी (Murraya Koenigii) है।

औषधिक महत्त्व

मीठा नीम के अनेक औषधिक महत्वों में से कुछ अत्यंत प्रभावी, सरल एवं निरापद प्रयोग निम्न हैं-

* **रक्तचाप नियंत्रित रखने हेतु-** उच्च रक्त चाप से पीड़ित व्यक्तियों को सुबह-सवेरे मीठा नीम की 8-10 पत्तियाँ (पर्णिकाएँ-Leaflets) रोजाना कोरा चबाना हितकर होता है। इससे उनका रक्तचाप नियंत्रित रहता है।

* **एण्टीऑक्सीडेंट्स के रूप में-** मीठा नीम की पत्तियाँ शाम के समय चबाने से वे शरीर में विशिष्ट प्रकार की स्फूर्ति तथा उत्तेजना का संचार करती हैं। एक प्रकार से ये एण्टीऑक्सीडेंट्स (Antioxidants) की भाँति प्रभाव देती हैं।

* **डिसेण्ट्री में-** डिसेण्ट्री की समस्या खड़ी हो जाने पर करी पत्ता की कुछ मात्रा जल में हल्के से उबालकर उस जल को पीने से त्वरित लाभ होता है।

* **नेत्र रोगों में-** नेत्रों की ज्योति बढ़ाने हेतु अथवा रतौंधी की समस्या होने पर मीठा नीम की पत्तियों के

चूर्ण की 2 ग्राम मात्रा नित्य जल से ग्रहण करने से परम लाभ होता है। इस हेतु इन पत्तियों को छाया में सुखाकर फिर पीसा जाता है चूर्ण को संचित रखा जा सकता है।

* **शुक्राणुवर्द्धन हेतु-** जिन व्यक्तियों के वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या में कम होती है उन्हें सन्तानोत्पत्ति का योग निर्मित होने में कठिनाई आती है। ऐसे व्यक्तियों को मीठानीम की छाल के चूर्ण का 1 ग्राम मात्रा शहद के साथ लेने से लाभ होता है। इसे दिन में एक बार सुबह के समय लेना चाहिए।

* **ताकत बढ़ाने हेतु-** करी पत्ता के पौधे की छाल का चूर्ण 1 ग्राम अथवा इसकी जड़ का चूर्ण 1 ग्राम दूध में औटाकर, मिश्री मिलाकर पीने से यौनेत्तजना में वृद्धि होती है- साथ ही शरीर पुष्ट होता है।



* **कीटाणुनाशक के रूप में-** करी पत्ता के बीजों का तेल उत्तम कीटाणुनाशक होता है। अतः एक्विजमा ठीक करने में अथवा घावों को सुखाने में यह मुफीद है। इसे सम्बन्धित स्थान पर लगाया जाता है।

* अतिसार में- धुले हुए ताजे हरे पत्तों का अर्क लाभदायक है।

करी पत्ता के तांत्रिक महत्त्व

भारत में इस पौधे का कोई तांत्रिक महत्त्व नहीं है या यूँ कहें कि भारतवर्ष में इसे तंत्र में प्रयोग नहीं किया जाता है। किन्तु दक्षिण एशिया के कई भागों में स्वकल्याणार्थ इस वृक्ष को पूजा जाता है। इसकी छाया में बैठकर अध्ययन करना शुभ रहता है।

मीठा नीम का वास्तु में महत्त्व

वास्तु की दृष्टि से इस पौधे का घर की सीमा में होना अशुभ नहीं है। इस पौधे का घर के दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में होना विशेष शुभ है। यदि यह प्रतिकूल दिशा में लगा हो तो समय-समय पर इसे छाँटते रहना चाहिये।